अप्रैल २०१८

कीमत ₹ २०

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

सत्य बोलो पर कैसा ?

अक्रम एक्सप्रेस

सत्य बोलो पर कैसा...

संपादकीय

बालमित्रों,

हमें बचपन से ही सिखाया जाता है कि हमेशा सत्य बोलना चाहिए। यह हमारे आर्य संस्कार हैं।

लेकिन कई बार सत्य बोलने से परेशानी खड़ी हो जाती है। तब हमें उलझन होती है कि सत्य बोलकर ठीक किया या नहीं?

इसका जवाब कहाँ से ढूँढें?

परम पूज्य दादाश्री ने इस अंक में सत्य कैसा होना चाहिए, उसकी सुंदर समझ दी है। तो आइए, इस अंक को पढ़कर और समझकर अपने जीवन में उतार लें।

-डिम्पल मेहता

संपादकः
डिम्पल मेहता
वर्ष : ६ अंकः १
अखंड क्रमांकः ६१
अप्रैल २०१८

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Ta & Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Ta & Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Ta & Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...

सत्य रूप में ही, सत्य शोभायमान होता है!

ऐसा है, सत्य की हर जगह ज़रूरत होती है और यदि सत्य है तो विजय होगा। लेकिन सत्य उसके रूप में ही होना चाहिए, उसकी व्याख्या में होना चाहिए।

अतः सत्य किसे कहेंगे? सही बात को सत्य कब कहेंगे? सिर्फ सत्य को ही नहीं देखना है। उसके चार विभाग होने चाहिए।

१) सत्य होना चाहिए
२) प्रिय होना चाहिए
३) हित करने वाला होना चाहिए
४) मित यानी कम शब्दों में होना चाहिए।
उसे सत्य कहा जाएगा।

अतः यदि सत्य प्रिय, हित और मित इन चारों को ध्यान में रखकर बोलेंगे तो वह सत्य है, वर्ना असत्य है।

१) सत्य होना चाहिए

सब से पहले तो सत्य होना चाहिए। अपनी बात सही साबित करने के लिए लोग पीछे पड़ जाते हैं। लेकिन सत्य को सही साबित नहीं करना है। सत्य बोलने में यदि सामने वाला व्यक्ति आपके सत्य का विरोध करता है तो समझना कि आपका सत्य नहीं है। उसके पीछे कोई कारण है, सत्य बोलने से सामने वाले को दुःख होता है तो हमें सत्य बोलना नहीं आता।

२) सत्य प्रिय होना चाहिए

नग्न सत्य, शोभा नहीं देता!

नग्न सत्य बोलना तो भयंकर गुनाह है। यदि किसी को दुःख हो जाए, तो वास्तव में ऐसी वाणी सत्य कही ही नहीं जा सकती। नग्न सत्य भी गलत ही कहा जाएगा।

नग्न सत्य किसे कहते हैं? जैसे हमारी माँ हैं, उनसे कहें, "आप तो मेरे पिता की पत्नी होती हो!" ऐसा कहेंगे तो अच्छा दिखेगा? यह सत्य है फिर भी माँ गाली देगी न? माँ क्या कहेंगी? "मुझे, तेरा मुँह मत दिखाना!" अरे, यह सही कह रहा हूँ। आप मेरे पिता की पत्नी हो, यह ऐसी बात है जिसे सब कबूल करेंगे! लेकिन ऐसा नहीं बोलना चाहिए। इसलिए नग्न सत्य नहीं बोलना चाहिए।

सत्य लेकिन प्रिय ही चलेगा!

सत्य इस तरह बोलना चाहिए कि सामने वाले को प्रिय लगे। लोग कहते हैं न कि, "ए काणा, तू यहाँ आ।" तो उसे अच्छा लगेगा? और कोई धीरे से कहे, "भाई, आपकी आँखें कैसे चली गई?" तो वह जवाब देगा या नहीं देगा? यदि उसे काणा कहेंगे तो?! लेकिन वह सत्य खराब लगेगा न? इसलिए यह उदाहरण दिया। सत्य प्रिय होना चाहिए।

वर्ना यदि सत्य सामने वाले को प्रिय नहीं लगता तो सत्य नहीं कहा जाएगा। अगर कोई बुढ़िया हैं, तो उन्हें "माजी" कहना चाहिए। उन्हें "बूढ़ी" कहेंगे तो वे कहेंगीं, "मुझे बुढ़िया कहता है?" अब वे हैं ७८ वर्ष की, लेकिन उन्हें "बुढ़िया" कहेंगे तो नहीं चलेगा? ऐसा क्यों? उन्हें अपमान लगता है। इसलिए हम उन्हें "माजी" कहेंगे, कि "माजी आइए"। तो यह सुंदर दिखेगा और वे खुश हो जाएँगी। कहेंगी "क्या भाई, पानी चाहिए? तुझे पानी पिलाऊँ ?" अर्थात् पानी-वानी सब पिलाएँगी।

३) हितकारी है, तभी सत्य!

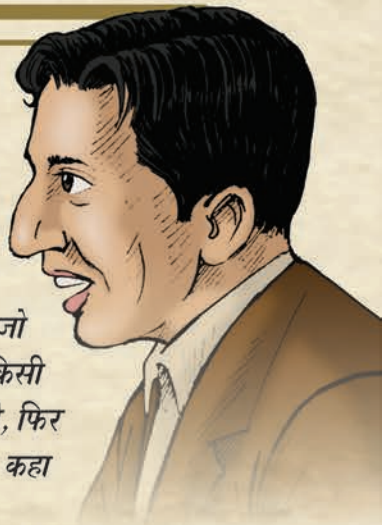

फिर वह सत्य सिर्फ प्रिय ही नहीं बल्कि सामने वाले के लिए हितकारी भी होना चाहिए। सामने वाले को लाभदायक भी होना चाहिए तो सत्य कहा जाएगा। यदि सामने वाले का हित नहीं होता है तो वह किस काम का? जब हम छोटे बच्चे से मिट्टी खाने के लिए मना करते हैं तब कहते हैं कि, "देखो, तालाब पर एक डायन रहती है, जो मिट्टी खाए वह उसे पकड़कर ले जाती है..." ऐसे किसी भी तरह हम उसे डराते हैं तो वह असत्य है, फिर भी हितकारी है न? तो वह सत्य कहा जाएगा।

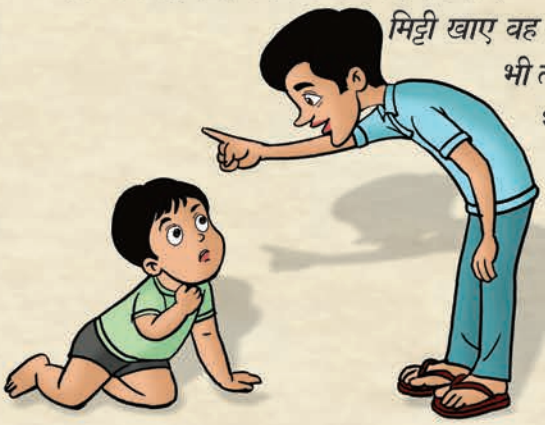

प्रश्नकर्ता : लेकिन जो हितकारी होता है, अगर वह सामने वाले को प्रिय ना लगे तो?

दादाश्री : हितकारी बात तो कैसी होती है? हम सामने वाले को मारेंगे फिर भी वह सुनेगा। क्योंकि वह समझ जाता है कि मेरे हित के लिए कह रहे हैं।

४) बिना मित का सत्य, कुरूप!

अब इतना ही नहीं। ऐसी तीन बातें एक व्यक्ति ने की, सत्य कहा, प्रिय लगे ऐसा बोला, हितकारी हो ऐसा बोला। लेकिन हम कहें, "अब बहुत हो गया, आपकी पूरी बात समझ गया। आपने मुझे सलाह दी, और वह मुझे समझ में आ गई, अब मैं जा रहा हूँ।" तो वह हम से कहेंगे कि "नहीं, मत जाओ। रुको। मेरी पूरी बात सुनो। सुनो तो सही।" अब यह असत्य हो गया। अतः भगवान ने मित कहा है। मित यानी प्रमाण में होना चाहिए। यदि संक्षिप्त में नहीं होता तो सत्य नहीं कहा जाता। क्योंकि यदि ज्यादा बोलेंगे तो सामने वाला व्यक्ति बोर हो जाएगा। तो वह सत्य नहीं कहा जाएगा। ऐसे सत्य से तो रेडियो अच्छा कि जब भी हमें स्विच बंद करना हो तो कर सकते हैं! इसलिए ज़रूरत से ज्यादा, एक्सेस बोलना भी असत्य ही हो गया।

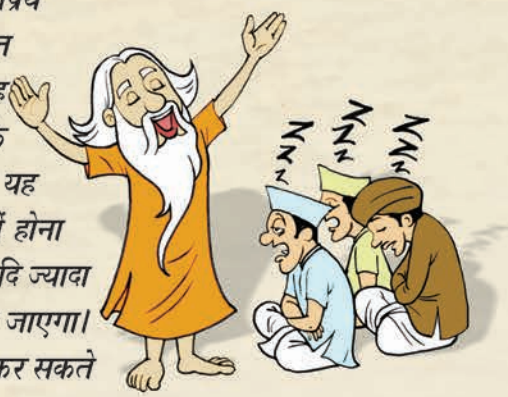

मित यानी सामने वाले को अच्छी लगे उतनी ही वाणी, ज़रूरत जितना ही बोले, ज्यादा ना बोले, सामने वाले को ज्यादा लगे तो बोलना बंद कर दे।

चारों ओर का सत्य

रात हो गई यानी बेड टाइम, मीत पापा के हाथ में स्टॉरी बुक देकर पलंग पर सो गया। पापा मीत के पास सो गए। "चल, आज पिनोकियो की कहानी पढ़ते हैं", ऐसा कहकर पापा ने कहानी शुरू की।

सालों पहले की बात है। एक वृद्ध कार्पेन्टर था। उसका नाम जीपेटो था। एक दिन जीपेटो ने लकड़ी के टुकड़े में से एक सुंदर बच्चे का आकार बनाया। उसका नाम पिनोकियो रखा। जीपेटो को इच्छा हुई, "काश, यह बच्चा जीवित होता!" एक परी ने यह इच्छा सुन ली। और उसने पुतले को जीवित कर दिया।

जीवित तो हो गया लेकिन पिनोकियो था तो लकड़ी का ही! परी ने शर्त लगाई कि, यदि पिनोकियो को मनुष्य बनना है तो उसे समझदार बनना पड़ेगा। पिनोकियो बहुत नटखट था। वह कई बार झूठ बोलता था। जब भी वह झूठ बोलता, तब उसकी लकड़ी की नाक एक इंच लंबी हो जाती। जब ऐसा होता तब वह अच्छा बनने का प्रोमिस करता। लेकिन वापस तुरंत वह अपना प्रोमिस भूल जाता।

एक बार पिनोकियो अपने दोस्तों के कहने से स्कूल मिस करके उनके साथ एक टापु पर सर्कस देखने चला गया। वहाँ उसे जीपेटो की बहुत याद आई।

इस ओर जीपेटा, पिनोकियो को ढूँढने के लिए निकल पड़ा। रास्ते में जीपेटो का अकस्मात हो गया, उसे एक व्हेल मछली निगल गई। जब पिनोकियो को उस बात का पता चला तो उसने अपनी जान की परवाह किए बिना जीपेटो को बचाया। पिनोकियो की बहादुरी और जीपेटो के लिए उसका लगाव देखकर परी खुश हो गई और उसे मनुष्य बना दिया। फिर खाया-पीया और खुशी से

रहे।

कहानी पूरी होते ही पापा हँसकर बोले, "पता है मीतू? बचपन में जब मैं झूठ बोलता था तब तुरंत दौड़कर आईने के सामने चला जाता और नाक पर हाथ घुमाकर चेक करता कि बड़ी हुई है क्या...! और फिर सभी को पता चल जाता कि मैंने झूठ बोला था! इज़न्ट इट फनी?" मीत को देखा, तो वह सो गया था। उसके सिर पर हाथ फिराकर, लाईट बंद करके, पापा भी सो गए।

सुबह हुई लेकिन पिनोकियो की बात मीत के मन से गई नहीं थी। नाश्ता करते समय मीत ने पापा से पूछा, "पापा, जब पिनोकियो झूठ बोलता था तब उसकी नाक लंबी हो जाती थी? क्या सचमुच ऐसा हो सकता है?" पापा ने मज़ाक में

कहा, "यू नेवर नो... होगा तब पता चलेगा।"

क्लास में भी मीत के मन में पिनोकियो और उसकी लंबी नाक के विचार चल रहे थे, "क्या झूठ बोलने से सचमुच नाक लंबी हो जाती है?" तभी रिसेस की बेल बजी।

कॉरिडोर में सभी बच्चे पप्पू पर पीछे से हँस रहे थे। लेकिन जब पप्पू पीछे देखता तब सब चुप हो जाते। पप्पू को कुछ शंका हुई इसलिए उसने सामने से आ रहे मीत को पकड़ा और धीरे से पूछा, "ए मीतुडा! क्या लड़के पीछे से मेरी हँसी उड़ा रहे हैं? सही बोलना वर्ना..."

मीत ने बच्चों को पप्पू के पैर की ओर इशारा करके मुँह दबाकर हँसते हुए देखा। मीत ने निडरता से जवाब दिया, "तेरे काम ऐसे होंगे तो सभी मज़ाक ही बनाएँगे न? वैसे तो तू इतनी होशियारी दिखाता है, लेकिन देख तो सही, बेवकूफ की तरह दोनों पैर में अलग रंग के मोज़े पहने हुए हैं।" यह सुनकर पप्पू गुस्से से आगबबूला हो गया। उसने मीत के मुँह पर एक मुक्का मारा और धम-धम करता हुआ वहाँ से चला गया। मीत की नाक

सूजकर लाल हो गई।

मीत के दोस्त सोनू ने दूर से यह दृश्य देखा। वह तुरंत दौड़कर मीत के लिए आइसपेक ले आया। मीत के नाक पर आइसपेक रखकर कहा, "तुझे उससे सही कहने की क्या ज़रूरत थी? सभी को पता तो था ही? देखा न, सही बोलने का परिणाम! मैं उसके साथ पंगा नहीं लेता तो उसे मेरे साथ कितना अच्छा रहता है न!"

सोनू की बात सुनकर मीत ने तुरंत प्रतिकार किया, "बेकार के वहम में मत रहना कि, पप्पू को तेरे साथ बहुत अच्छा रहता है। एक दिन पप्पू तेरे बारे में ऐसा बोल रहा था कि, "कौन वह सोनुडा? वह कोई मेरा फ्रेन्ड नहीं है, चमचा है। डरपोक, सारे दिन मेरी चापलूसी करता है। उसे तो मेरा होमवर्क करवाने के लिए साथ में रखा है। उसके बिना मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा। उसके जैसे तो और बहुत मिल जाएँगे।"

यह सुनकर सोनू की आँख में पानी आ गया और वह वहाँ से चला गया। मीत सोनू के पीछे भागा, "सोनू... सोनू... रुक... मेरी बात सुन..." सोनू रेस्टरूम में चला गया और धड़ाम से रेस्टरूम का दरवाज़ा बंद करने में अन्जाने में ही मीत के मुँह पर ही दरवाज़ा बंद हुआ।

चोट पर ही फिर से चोट लग गई और मीत की नाक सूजकर और ज्यादा बड़ी हो गई। नाक में से टप-टप खून बहने लगा। तभी रिसेस पूरी होने की बेल बजी। क्लास में जाते हुए, टीचर ने मीत को देखा। "ओह डीयर, तुझे तो बहुत चोट लगी है। चल, तेरी ड्रेसिंग कर दूँ।", कहकर टीचर मीत को अपनी ऑफिस में ले गए।

"इतनी शैतानी क्यों करते हो! एक ओर मुझे क्लास में जाने के लिए देर हो रही है..."

टीचर की बात बीच में ही काटकर मीत बोला, "टीचर, मैं शैतानी नहीं कर रहा था। आपको पता है आज क्या हुआ? पप्पू है न..."

"मीत अभी मत बोल और इधर देख", टीचर ने मीत को टोका। लेकिन मीत ने टीचर की बात नहीं सुनी और फिर से बोलने लगा, "टीचर, सुनिए तो सही... ऐसा हुआ कि मैंने पप्पू से सही ही कहा था लेकिन...", मीत बोलते-बोलते टेड़ा-मेड़ा हो रहा था और अन्जाने में ही टीचर का सिर मीत की नाक से टकरा गया। मीत ज़ोर से चिल्ला उठा।

"आई एम वेरी सॉरी मीत! प्लीज़ अब चुपचाप बैठ, तो मैं तेरी नाक पर ड्रेसिंग करके पट्टी बाँध दूँ", टीचर की आवाज़ में बहुत अधीरता लग रही थी। मीत की ड्रेसिंग करके, टीचर को क्लास में पहुँचने में देर हो गई और उन्हें प्रिन्सिपल साहब की डाँट खानी पड़ी।

पट्टी बाँधने के बाद मीत की नाक बहुत मोटी हो गई। क्लास में किसी ने मीत को "पिनोकियो" कहकर चिढ़ाया। यह सुनकर मीत को लगा, "अरे

हाँ! यह तो ज़ोरदार हो गया। सत्य बोलने के बाद भी मेरी नाक बड़ी हो गई।"

शाम को मीत ने पापा को पूरी बात विस्तार से बताई, "लेकिन पापा, मुझे एक बात समझ में नहीं आई। पिनोकियो झूठ बोलता था तब उसकी नाक बड़ी हो जाती थी। लेकिन मेरे साथ तो उल्टा ही हो गया। जितनी बार मैं सही बोला उतनी बार मेरी नाक बड़ी हो गई।" मीत ने अपनी परेशानी पापा से कही।

पापा के चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट आ गई। "बेटा, झूठ तो कभी नहीं बोलना चाहिए। सच ही बोलना चाहिए। लेकिन तुम्हें पता है सच किसे कहते हैं? सच बात के चार पक्ष होने चाहिए।"

"चार पक्ष?" मीत को सुनकर आश्चर्य हुआ।

"हाँ, चार पक्ष।"

१. वह बात सच होनी चाहिए।

२. वह बात प्रिय होनी चाहिए। बात इस तरह नहीं बोलनी चाहिए कि सामने वाले को कड़वी लगे।

३. उस बात में सामने वाले का हित होना चाहिए। और

४. बात कम शब्दों में संक्षेप में कहनी चाहिए। ज़रूरत से ज्यादा बोलने से यदि सामने वाले को बोरियत हो तो वह सत्य नहीं कहा जाएगा।

अब तू ही बता, पूरे दिन में तेरी एक भी बात में सत्य था?

मीत सोचने लगा।

पापा ने स्पष्ट किया, "बेटा, तुमने पप्पू से सही बात कड़वी वाणी में कही। सोनू से जो बात कही उसमें उसका हित था?"

थोड़ा सोचकर मीत बोला, "नहीं पापा, उस बात में सोनू का ज़रा भी हित नहीं था और टीचर से भी संक्षेप में बात बताने के बजाय, लंबी करके बताई और उनका टाइम वेस्ट किया। इसका मतलब यह हुआ कि, मैं पूरे दिन में सत्य बोला ही नहीं।"

अपनी नाक पर हाथ रखकर मीत बोला, "पापा, कल मैं पप्पू, सोनू और टीचर से दिल से "सॉरी" कहकर माफी माँग लूँगा। जैसे पिनोकियो समझदार बन गया था, वैसे मैं भी आपका अच्छा बेटा बन जाऊँगा।"

पापा ने प्रेम से मीत के सिर पर हाथ फिराया।

सुबह मीत की नाक की सूजन कम हो गई थी, और घाव भी ठीक हो गया था। आईने में अपना प्रतिबिंब देखकर मीत मुस्कुराया और मन ही मन खुद से प्रोमिस किया, "अब से मैं हमेशा चारों पक्ष देखकर सत्य बोलूँगा।"

वचनबल

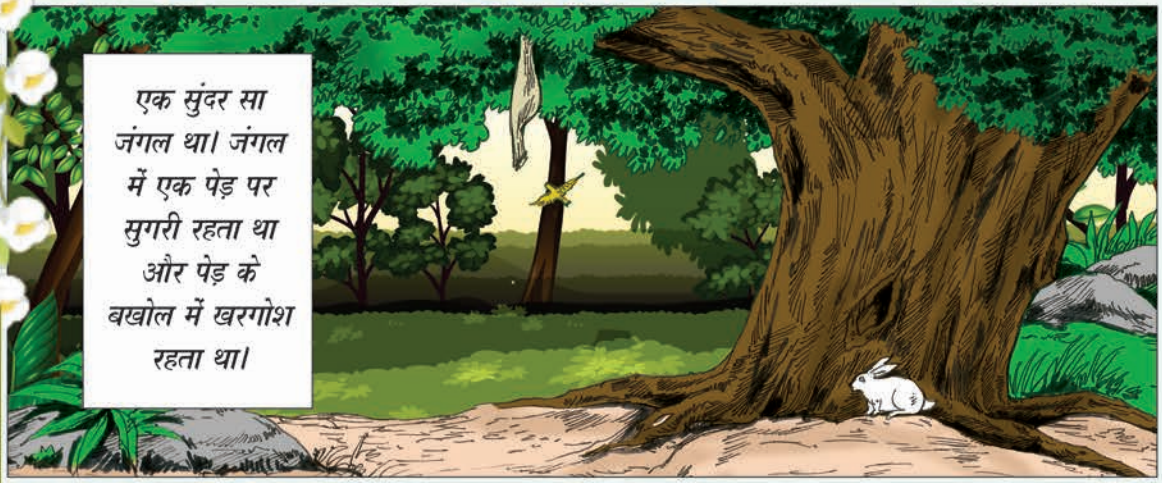
एक सुंदर सा जंगल था। जंगल में एक पेड़ पर सुगरी रहता था और पेड़ के बखोल में खरगोश रहता था।

एक दिन मुसलधार बारीश पड़ी। पेड़ पर बंदर आकर बैठ गया। वह ठंड से थर-थर काँप रहा था।

तेरे जैसे मस्तीखोर का यही प्रॉब्लम है। अच्छी सीज़न में बूरी सीज़न के बारे में नहीं सोच सकते?
बंदर ने सुगरी की बात की परवाह नहीं की।

हम गर्मियों में मेहनत करके समय पर सुंदर घोंसला बना लेते हैं और बरसात में आराम से बरसात की मज़ा लेते हैं। यदि कूदाकूद करके सारा समय बर्बाद नहीं करते तो आज काँपना नहीं पड़ता।

अब बंदर का दिमाग बिगड़ गया। धड़ाम से सुगरी के पेड़ पर कूदा और उसका घोंसला तोड़-फोड़ दिया। सुगरी को हवा में लटकाते हुए गर्दन से उठाकर पकड़ा।

बचाओ, बचाओ...

खरगोश ने सुगरी की आवाज़ सुनी और तुरंत ही अपनी बखोल में से बाहर आया।

अरे, बंदर भाई। देखो न... उस पेड़ की बखोल बिल्कुल खाली है। आप वहाँ जाकर आराम क्यों नहीं करते?

बंदर ने सुगरी को छोड़ दिया और कूदकर बखोल में जाकर बैठ गया। यह देखकर सुगरी को बहुत आश्चर्य हुआ।

बंदर ने तुम्हारी बात तुरंत मान ली। तो क्या मैंने उससे गलत कहा था?

बिना माँगी हुई सलाह सुनना किसे अच्छा लगता है? सही बात भी समय, संयोग और पात्र को देखकर ही कही जाती है। ज्यादा बोलकर वाणी वेस्ट करने का क्या फायदा?

तभी बाघ की दहाड़ सुनाई दी। सोती हुई लोमड़ी को जगाकर...

लोमड़ी उठ और बता कि मेरे मुँह से किसकी बदबू आ रही है?

यदि मेरा जवाब बाघ को अच्छा नहीं लगा, तो मेरा आ बनेगा।

आहाहा, बदबू नहीं, वनराज। खूशबू बोलो... सुगंधित फूल-फल जैसी सुगंध।

चापलूस लोमड़ी! मैं शेर हूँ। गाय-भेंस नहीं कि फल-फूल खाऊँ.. रुक... झूठी...

बाघ ने लोमड़ी पर छलाँग लगाई और लोमड़ी जान बचाकर भाग गई।

यहाँ कोई है जो मुझे जवाब दे?

यहाँ तक तेरे मुँह की बदबू इतनी आ रही है कि साँस लेना भी मुश्किल हो रहा है। क्या पता तेरे क्रूर हाथों से किस प्राणी का शिकार हुआ है!

बाघ ने दहाड़ की और सुगरी डरकर उड़ गया।

चल खरगोश, तू बता। क्या मेरे मुँह से बदबू आती है?

खरगोश दो पल के लिए चुप हो गया। फिर उसने ज़ोर से छींक खाई।

बाघ भाई, इस बारीश में भींगकर मुझे सर्दी हो गई है और नाक तो जैसे काम ही नहीं कर रही।

बाघ शांति से चला गया। सुगरी के आश्चर्य का पार नहीं था।

बाघ जैसा बाघ भी इस खरगोश की बात मान लेता है। ऐसा तो क्या होगा इस खरगोश में? चलो, उस समझदार उल्लू से इस बात का रहस्य पूछूँ...

उल्लू भाई, ऐसा तो क्या है इस खरगोश में, कि सभी को उसकी बात मान्य होती है?

वचनबल है।

क्या तुमने कभी खरगोश को लोमड़ी की तरह, किसी की झूठी प्रशंसा करते सुना है?

नहीं।

क्या तुमने कभी खरगोश को बाघ की तरह किसी को डराते देखा है? किसी का मज़ाक उड़ाकर दुःख देते हुए देखा है? तुम्हारी तरह बेकार की बकबक करते सुना है?

नहीं, कभी नहीं।

तभी हाथी भाई खरगोश भाई को बुलाने आ गए...

खरगोश भाई झट से हाथी की पीठ पर बैठ गए। अब सुगरी को आश्चर्य नहीं, लेकिन भरोसा था कि खरगोश भाई के दो शब्दों से झगड़ा सॉल्व हो जाएगा।

चलो खेलें...

१. चार नंबर के ड्रम पर खड़े हुए हाथी के बॉल का नंबर क्या होना चाहिए?

२. नीचे दिए गए नंबर में प्रश्नार्थचिन्ह् की जगह पर कौन सा नंबर आएगा?

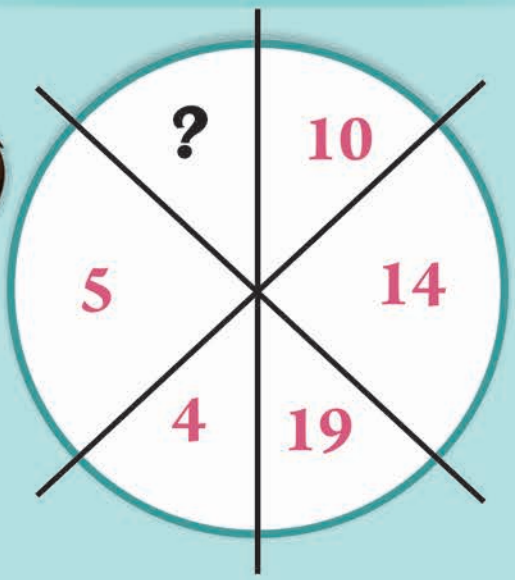

ऐतिहासिक गौरवगाथा

एक बार लक्ष्मी जी और दशा माँ बातें कर रहे थे। तभी नारद जी वहाँ से निकले। उन्होंने दोनों देवियों को आदर भाव से प्रणाम किया। फिर आदत के अनुसार दोनों देवियों की स्तुति करने लगे। देवियों ने प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद दिया और नारद जी उनकी अनुमति लेकर आगे चले गए।

दोनों देवियों को लगा कि, नारद जी हमेशा सभी को अच्छा लगे ऐसा बोलते हैं। कभी ऐसा अप्रिय नहीं बोलते कि किसी को सुनना अच्छा न लगे। कभी असत्य भी नहीं बोलते। कुछ ऐसा सेट करना चाहिए कि, उन्हें अप्रिय और असत्य बोलना पड़े।

दोनों देवियों ने नारद जी की परीक्षा लेना तय किया। वे उनके पास गई। लक्ष्मी जी बोलीं, "नारदमुनि! आप ही बताओ कि हममें से कौन ज्यादा सुंदर है?"

दशा माँ ने कहा, "नारदमुनि! सोच-समझकर उत्तर देना। देखना कहीं आपके उत्तर से जगत् के लोगों को कोई तकलीफ न पड़ जाए।"

नारद जी उलझन में पड़ गए।

नारद जी ने दोनों देवियों से दो हाथ जोड़कर विनती की, "माता जी, क्यों अपने बच्चे की इतनी कठिन परीक्षा ले रहे हों ? जगत् के जीवों को आप दोनों की कृपा के बिना नहीं चलेगा। लक्ष्मी जी की कृपा से लोगों को समृद्धि मिलती है। और दशा माँ की कृपा से लोगों के दुःख, तकलीफें दूर रहती हैं।"

दशा माँ लक्ष्मी जी के सामने हल्का सा मुस्कुराते हुए बोलीं, "नारद जी, उत्तर तो देना ही पड़ेगा, उत्तर नहीं देने का विकल्प ही नहीं है।"

नारद जी ने दोनों देवियों की प्रदक्षिणा की और विनम्रता से बोले, "लक्ष्मी जी, आप आगे से दशा माँ से ज्यादा सुंदर दिखते हों, और दशा माँ, आप पीछे से लक्ष्मी जी से ज्यादा सुंदर दिखते हों।"

दोनों देवियाँ सोच में पड़ गई।

लक्ष्मी जी ने पूछा, "नारद जी, यह कैसा उत्तर है?"

दशा माँ ने भी कहा, "नारद जी, आपका उत्तर ठीक से समझाइए!"

नारद जी ने समझाते हुए कहा, "सही है माताओं, लक्ष्मी माता आती हैं तब अच्छी लगती हैं, उन्हें आते हुए देखकर प्रसन्नता होती है। दशा माँ जाते हुए अच्छी लगती हैं। जब परेशानियों का समय पूरा होता है तब शांति अनुभव होती है।"

यह सुनकर दोनों देवियाँ प्रसन्न हो गई और नारद जी को खूब-खूब आशीर्वाद दिए।

रियल लाइफ स्टॉरी

१. जुलियन एफ. डेटमेर

ई.स. १८८५ में न्यूयॉर्क में जुलियन डेटमेर ने गरम कपड़ों की बड़ी डेटमेर वुलन कंपनी की स्थापना की।

कंपनी के एक ग्राहक को पंद्रह डॉलर चुकाने बाकी थे। लेकिन ग्राहक को यह बात मंजूर नहीं थी। उस समय पंद्रह डॉलर की रकम बहुत बड़ी कही जाती थी। कंपनी के क्रेडिट डिपार्टमेन्ट ने ग्राहक को बहुत बार रकम चुकता करने का याद दिलाया। लेकिन ग्राहक मान ही नहीं रहा था कि, उसे रकम चुकता करना बाकी है।

एक दिन, वह बहुत गुस्से के साथ डेटमेर के ऑफिस में आया और डेटमेर को बहुत उल्टा-सीधा सुनाया। और अंत में यह भी कहा, "अब मैं डेटमेर वुलन कंपनी से एक डॉलर का भी माल नहीं खरीदूँगा।"

डेटमेर को पक्का पता था कि ग्राहक की बात गलत थी। फिर भी उन्होंने अपनी सही बात का आग्रह, ग्राहक के सामने नहीं किया। ग्राहक की सभी कड़वी बातें शांति और धैर्यपूर्वक सुनी।

अंत में जब ग्राहक शांत हुआ तब डेटमेर ने उससे कहा, "हो सकता है कि हमारी कोई भूल हो। हमारे क्रेडिट डिपार्टमेन्ट ने आपको परेशान किया होगा, उसके लिए मैं आपकी माफी माँगता हूँ। अब वापस ऐसा नहीं होगा।" फिर बहुत ही निखालसता से डेटमेर ने ग्राहक को दूसरे वुलन हाउस के बारे में बताया।

डेटमेर के निर्मल शब्द ग्राहक को स्पर्श कर गए। डेटमेर की बात का ग्राहक पर इतना अच्छा प्रभाव पड़ा कि, उसने घर जाकर शांति से बिल देखें। बिल देखकर ग्राहक को ख्याल आया कि वास्तव में भूल उसकी ही थी।

तुरंत ही उसने पंद्रह डॉलर के चैक के साथ, कंपनी को एक माफी पत्र भी लिखकर भेजा। साथ ही साथ कंपनी को एक बहुत बड़ा कपड़ों का ऑर्डर भी दिया। वह ज़िंदगीभर डेटमेर कंपनी का विश्वासु ग्राहक बना रहा। इतना ही नहीं, उस ग्राहक ने अपने नवजात पुत्र का मिडल नेम भी "डेटमेर" रखा।

मित्रों, हर एक को अपनी बात सत्य ही लगती है न? लेकिन यदि उसका आग्रह रखते हैं तो वह बात कड़वी बन जाती है। अपनी सत्य बात का आग्रह रखे बिना, दुःख नहीं हो और समाधान रहे ऐसे शब्द कहकर, डेटमेर ने ज़िंदगीभर के लिए ग्राहक को जीत लिया।

२. ज्योतिन्द्र दवे

हास्य लेखक ज्योतिन्द्र दवे सूरत की एक कॉलेज में फेलो थे। तब वहाँ महाकवि नानालाल के भाषण का आयोजन हुआ। सभी तैयारियाँ हो गई फिर अतिथिगृह से भाषण के स्थल तक कवि को ले आने का काम ज्योतिन्द्र दवे को सौंपा गया।

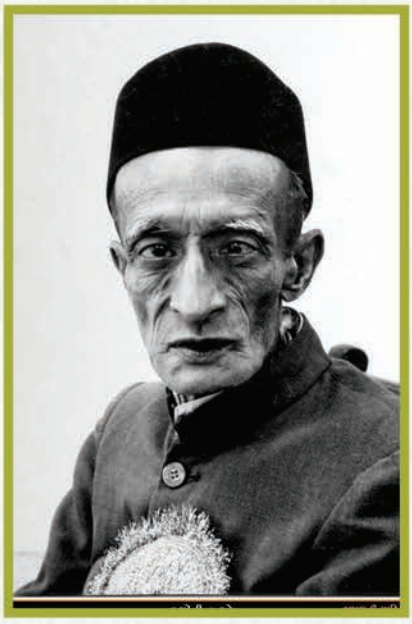

वे अतिथिगृह पहुँचे। कवि ने ऐसे ही फॉर्मेलिटी के लिए ज्योतिन्द्र से पूछा, "आप कविता बनाते हों?"

मज़ाकिया स्वभाव के ज्योतिन्द्र ने मज़ाक में ही फट से जवाब दे दिया, "यह मूर्खता मैं नहीं करता!"

एक पल के लिए नानालाल का चेहरा लाल हो गया और गुस्से में पूछा, "मैं कविता बनाता हूँ वह क्या मूर्खता है?"

ज्योतिन्द्र के इस व्यवहार को कवि ने अपना अपमान समझा और भाषण के लिए जाने में मना कर दिया।

तुरंत ही ज्योतिन्द्र ने कवि को मनाने के लिए स्पष्टता की, "साहब, वास्तव में मेरे कहने का आशय यह था कि, यदि मैं कविता बनाउँगा तो मूर्खता कही जाएगी, और यदि आप कविता नहीं बनाओगे तो मूर्खता कही जाएगी।"

यह सुनकर नानालाल हँस पड़े।

अपने अहितकारी और अप्रिय शब्दों को सुंदर ढंग से पलटकर, ज्योतिन्द्र ने बिगड़ी हुई बाज़ी सुधार ली।

पज़ल के जवाब :

१. जवाब : १२ हाथी के बॉल पर लिखे हुए नंबर, उसके दोनों ओर के हाथी के ड्रम के नंबरों को जोड़ने से मिलेगा।

२. जवाब : ७ नंबर ४ से शुरू करते हुए घड़ी के काँटे की तरह दाई ओर आगे बढ़ते हुए क्रम पर...

गुरुकुल में आमंत्रित पूज्यश्री

Theme : Akram Engineer Workshop

खेल के साथ ज्ञान

Welcome

इन्फॉर्मल

प्रश्नोत्तरी

पुरस्कार वितरण

ग्रुप फोटो

Akram Express

April 2018
Year : 6, Issue : 1
Conti. Issue No.: 61

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

बालविज्ञान प्रस्तुत

टेल ऑफ ओरीग्स Pack-2 (किताबें) विमोचन करते हुए पूज्यश्री...

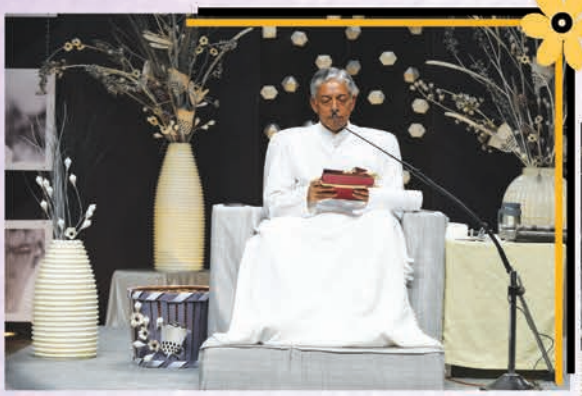

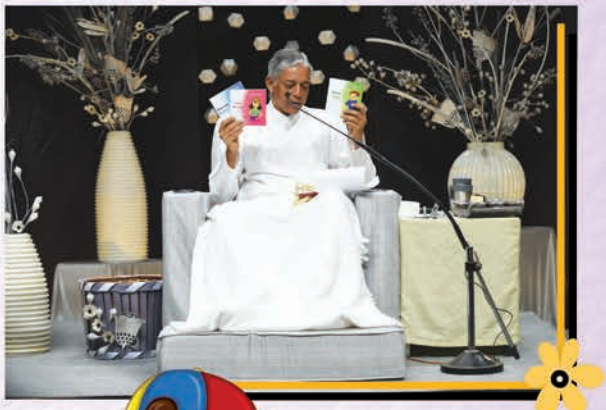

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** *और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा.* **AGIA4313##** *अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।*

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५४००७५०० पर **SMS** *करें।*

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, *२.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।*

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025 and published